

इकाई-5

प्रश्न 1. उपयोगिता मूल्य और कलात्मक मूल्य क्या है? मानव जीवन में दोनों कैसे महत्वपूर्ण हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

या

‘जब कोई उपयोगिता नहीं है तो कला के लिए भी कोई गुंजाइश नहीं है।’ के बारे में बताएँ।

उत्तर—मूल्य हमारे नैतिक आचरण का एक हिस्सा है। वे एहसास और सही समझ के स्वाभाविक परिणाम हैं, जो हमेशा निश्चित होते हैं। भय, लालच या अंध-विश्वास के माध्यम से मूल्यों को थोपने की आवश्यकता नहीं है। इसे दो रूपों में वर्गीकृत किया गया है—

1. **उपयोगिता मूल्य**—शरीर के लिए पोषण, संरक्षण और साधन प्रदान करने में भौतिक सुविधा की भूमिका सुनिश्चित करने में सहायक मूल्यों को उपयोगिता मूल्य कहते हैं।

2. **कलात्मक मूल्य**—भौतिक सुविधा की भूमिका सुनिश्चित करने में मदद करने और उसकी उपयोगिता को बनाए रखने के लिए उपयोगी मूल्यों को कलात्मक मूल्य कहते हैं।

उदाहरण के लिए, एक पेन की उपयोगिता मूल्य यह है कि यह लेखन में सहायक है। यह शरीर को एक साधन प्रदान करता है।

कलम को एक टोपी प्रदान करना ताकि स्याही न फैले, लिखते समय कलम पकड़ने के लिए एक उचित डिजाइन आदि, कलम की उपयोगिता को बनाए रखता है। इसे कलम का कलात्मक मूल्य कहते हैं। एक शर्ट की उपयोगिता है कि यह शरीर की रक्षा करता है। यह इसका उपयोगिता मूल्य है। शर्ट को डिजाइन करना ताकि इसे आसानी से लगाया जा सके, कलात्मक मूल्य है।

प्रश्न 2. नैतिक मानवीय आचरण की निश्चितता से आपका क्या अभिप्राय है? यह कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है?

उत्तर—आत्म-अन्वेषण के माध्यम से प्राप्त सही समझ भी हमें मानव आचरण की निश्चितता की पहचान करने में सक्षम बनाती है जिसे **नैतिक मानव आचरण** भी कहा जाता है। यह सभी मनुष्यों के लिए समान है।

इसलिए हम नैतिक मानव आचरण की सार्वभौमिकता को भी समझने में सक्षम हैं जो सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के अनुरूप है। हम में से प्रत्येक एक निश्चित आचरण करना चाहता है, लेकिन वर्तमान में हम यह सुनिश्चित करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। इसका कारण यह है कि हम वर्तमान में अपनी पूर्व धारणाओं या मान्यताओं के आधार पर रह रहे हैं जो सत्य या सही समझ के अनुरूप नहीं हैं। लेकिन, यह स्थिति न तो हमें संतुष्टि देती है और न ही दूसरों को। **जब तक हमारे पास सही समझ नहीं है, हम नैतिक मानवीय आचरण की निश्चितता की पहचान करने में सक्षम नहीं हैं।** इसे निम्नलिखित के संदर्भ में समझा जा सकता है—

(i) **मूल्य**—सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के अनुसार जीवन यापन करने को क्षमता (या किसी इकाई की बड़े क्रम में भागीदारी) इसकी प्राकृतिक विशेषताओं को मूल्यों के रूप में जाना जाता है। मूल्य हमारे नैतिक आचरण का एक हिस्सा हैं।

(ii) **नीति**—नीति संसाधनों (स्वयं, शरीर और धन-मन, तन और धन) के संवर्धन, संरक्षण और सही उपयोग के बारे में निर्णय (योजना, कार्यक्रम, कार्यान्वयन, परिणाम, मूल्यांकन) लेने का कार्य करती है।

(iii) चरित्र—चरित्र की निश्चितता मेरे व्यवहार और कार्य की निश्चितता का परिणाम है। अतः मेरी इच्छा, विचार और चयन की निश्चितता मेरे जीवन को निश्चितता प्रदान करती है।

प्रश्न 3. व्यापक मानव लक्ष्य के प्रकाश में व्यवसाय पर टिप्पणी करें।

उत्तर—कोई भी व्यवसाय व्यापक मानव लक्ष्य के अनुसरण में बड़े स्तर में मानव द्वारा भागीदारी के लिए एक रास्ता है। इस प्रक्रिया में, व्यक्ति अपने परिवार की आजीविका के लिए योगदान करने में सक्षम होता है और समाज और प्रकृति के चारों बड़े स्तरों में भाग लेता है। इन सभी गतिविधियों के लिए कौशल की एक निश्चित डिग्री की आवश्यकता होती है जिससे व्यापक मानव लक्ष्य के अनुरूप होने की उम्मीद की जाती है। तभी, ये समाज के साथ-साथ व्यक्ति के निरंतर कल्याण के लिए अनुकूल होंगी। किसी भी व्यावसायिक गतिविधि की उत्कृष्टता या सफलता इस व्यापक दृष्टिकोण से आंकी जाती है, न कि केवल धन सृजन से। तदनुसार, व्यवसाय न केवल किसी की आजीविका कमाने का साधन है, बल्कि बड़े स्तर में उचित भागीदारी से किसी के विकास का साधन है। यह किसी की समझ को प्रमाणित करने के लिए एक महत्वपूर्ण गतिविधि है, जिससे अन्य मनुष्यों के साथ और बाकी प्रकृति के साथ पारस्परिक रूप से पूर्ण तरीके से बातचीत होती है। इस प्रकार, व्यवसाय एक 'सेवा' है।

प्रश्न 4. व्यावसायिक नैतिकता से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तर—व्यावसायिक नैतिकता का अर्थ है नैतिक मानवीय आचरण के साथ व्यावसायिक क्षमता का विकास करना। नैतिक मानव-आचरण का अर्थ है मानव आचरण की निश्चितता। नैतिक मानव आचरण व्यावसायिक नैतिकता की नींव है। व्यावसायिक नैतिकता सुनिश्चित करने का एकमात्र प्रभावी तरीका व्यवसाय (मानव) में नैतिक क्षमता का सही मूल्यांकन और व्यवस्थित विकास है। व्यवसाय मानव गतिविधि का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसे बड़े क्रम में भाग लेने के लिए लक्षित किया गया है जिसमें समाज और प्रकृति शामिल हैं। इस प्रकार, यह एक सामंजस्यपूर्ण समाज के लिए आवश्यक मानव प्रयास के पाँच क्षेत्रों में से प्रत्येक में एक के लिए एक सार्थक भागीदारी है। व्यवसाय का नैतिक आचरण व्यापक मानव लक्ष्य की पूर्ति के लिए किसी के व्यावसायिक कौशल का सही उपयोग करता है और इस प्रकार, सार्थक रूप से बड़े क्रम में भाग लेता है।

व्यावसायिक नैतिकता उन नैतिक मुद्दों की चिन्ता करती है जो विशेषज्ञ ज्ञान के कारण उत्पन्न होते हैं तथा इस बात का भी ध्यान रखती है कि जनता को सेवा प्रदान करते समय इस ज्ञान का उपयोग कैसे नियंत्रित किया जाना चाहिए।

प्रश्न 5. पेशेवर नैतिकता में सक्षमता से आप क्या समझते हैं? उद्योग में इसके निहितार्थ के दो उदाहरण दें।

उत्तर—व्यावसायिक नैतिकता का अर्थ है नैतिक मानवीय आचरण के साथ व्यावसायिक क्षमता का विकास करना। व्यक्ति में नैतिक क्षमता विकसित करना व्यावसायिक नैतिकता सुनिश्चित करने का एकमात्र प्रभावी तरीका है। नैतिक क्षमता का विकास उचित मूल्य शिक्षा के माध्यम से प्राप्त करने के लिए एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है। चूँकि व्यवसाय केवल जीवन की गतिविधियों का एक समुच्चय है अतः व्यवसाय में सक्षमता केवल किसी की सही समझ का प्रकटीकरण होगा।

यह व्यक्ति/लोगों के अनुकूल और पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकियों, उत्पादन प्रणालियों आदि को पहचानने और विकसित करने की क्षमता प्राप्त करता है।

प्रश्न 6. 'सार्वभौमिक मानवीय व्यवस्था' से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर—सार्वभौमिक मानव व्यवस्था (सर्वभूम व्यवस्था) मानव और प्रकृति की अन्य संस्थाओं सहित हर इकाई से संबंधित होने की भावना है। व्यापक मानव लक्ष्य को समझने के बाद, हम न केवल मनुष्यों के साथ, बल्कि शेष प्रकृति के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम हैं। हम यह देखने में सक्षम हैं कि हम प्रकृति में हर इकाई से संबंधित हैं और उस रिश्ते में पारस्परिक पूर्ति सुनिश्चित करते हैं। सद्भाव की समझ के आधार पर, हमें एक अविभाजित समाज और सार्वभौमिक मानव व्यवस्था की धारणा मिलती है। सार्वभौमिक मानव आदेश में निम्नलिखित शामिल होंगे—

- (i) खंडित समाज के प्रति मानव के प्रयास (शिक्षा, स्वास्थ्य आदि) के पाँच आयाम।
- (ii) परिवार से विश्व परिवार तक संगठन के कदम,

प्रश्न 7. जीवन के सभी चार स्तरों पर रहने वाले मूल्य के निहितार्थ क्या हैं? के बारे में बताएँ।

उत्तर—मूल्य-आधारित जीवन के निहितार्थों का अध्ययन निम्नलिखित शब्दों में किया जा सकता है—

1. **व्यक्ति के स्तर पर—**व्यक्तिगत स्तर पर सुख और समृद्धि की ओर संक्रमण होगा। यह आत्म-विश्वास, सहज आनंद, शांति, संतोष और स्वयं में आनंद पैदा करेगा, और व्यक्ति के जीवन में दृढ़ता, बहादुरी और उदारता भी।

2. **परिवार के स्तर पर—**रिश्तों में पारस्परिक पूर्ति, परिवार में समृद्धि, संयुक्त परिवारों का निर्वाह, भेदभाव के बिना सभी के लिए सम्मान, आदि।

3. **समाज के स्तर—**पर समाज में निर्भीकता, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, उत्पादन, विनिमय और भंडारण के लिए समग्र व्यवस्थाएँ, राष्ट्रों के बीच सामंजस्य, एक परिवार के रूप में बढ़ती दुनिया।

4. **प्रकृति के स्तर पर—**प्रकृति में सभी इकाइयों का सह-अस्तित्व, दुनिया में सभी संस्थाओं के निर्वाह के लिए पृथ्वी को अधिक से अधिक अनुकूल बनाना, मौसमों का संतुलन, समुचित विकास आदि।

प्रश्न 8. वर्तमान जीवन के विचार व्यावसायिक जीवन में विरोधाभासों और दुविधाओं की ओर कैसे ले जाते हैं? समझाइए।

उत्तर—विरोधाभासों और दुविधाओं—अंतर्विरोधों और दुविधाएँ प्रचलित विश्वदृष्टि द्वारा उत्पन्न होती हैं जिसमें धन अधिकतमकरण को प्रमुख उद्देश्य माना जाता है। इस तरह के एक प्रतिमान में, 'तुम्हारी हानि ही मेरा लाभ है'। इस प्रकार दूसरे व्यक्ति की खुशी मेरी खुशी के विरोध में प्रतीत होती है। उस स्थिति में, अन्य लोगों को संपन्नता हासिल करने के लिए एक का शोषण करना पड़ता है और स्थायी तरीके से पारस्परिक पूर्ति की कोई संभावना नहीं होती। उसी तरह, प्रकृति का शोषण भी स्वीकार्य हो जाता है क्योंकि यह एक व्यक्ति को आसानी से धन संचय करने में मदद करता है और इसकी कोई सीमा नहीं है।

उदाहरण के लिये जब भी किसी वस्तु की कमी होती है और सामान्य रूप से लोग संकट में हैं। हालांकि ऐसी स्थिति में व्यवसायी भौतिकवादी दुनिया के दृष्टिकोण से संपन्न होते हैं और इसे अधिक से अधिक लाभ कमाने के अवसर के रूप में देखते हैं। उन्हें लगता है कि बाजार में 'सुधार' हो रहा है और उन्हें इसका अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए, यहाँ तक कि अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जमाखोरी और कालाबाजारी से भी करते हैं। इस प्रकार ऐसे व्यवसायियों और उपभोक्ताओं के हित सीधे संघर्ष में आते हैं। जबकि वास्तव में उनसे परस्पर पूरक होने की उम्मीद की जाती है। इसी तरह, मुनाफा बढ़ाने के लिए अनैतिक प्रथाओं जैसे कि मिलावट और नकली उत्पादन आदि को भी अपनाया जाता है, जो कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा को बहुत खतरे में डालते हैं।

ऐसी स्थिति में किसी के लाभ को कितना महत्व दिया जाना चाहिए और कितना कल्याणकारी होना चाहिए, इसकी दुविधा हमेशा बनी रहती है।

प्रश्न 9. समग्र तकनीक से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में वर्णन करें।

उत्तर—समग्र तकनीकी का अभिप्राय है एक ऐसी तकनीकी जो सही समझ पर आधारित मानव के व्यापक लक्ष्यों की पूर्ति के लिये बनी हो। जो मानव तथा पर्यावरण के अनुकूल हो। वर्तमान परिदृश्य में मनुष्य के बढ़ते हुए लालच के कारण उत्पन्न विरोध तथा अवसाद के परिणामस्वरूप प्रकृति में जो नुकसान हुआ है उसकी भरपाई कठिन है परन्तु समग्र तकनीकी किसी हद तक हमें इस नुकसान को और अधिक होने से बचा सकती है। समग्र तकनीकी के मूल्यांकन के तीन विशेष पहलू हैं।

1. यह उचित आवश्यकताओं की पूर्ति करती हो।
2. यह मानव के अनुकूल हो।
3. यह पर्यावरण के अनुकूल हो।
4. सुरक्षित, उपयोगकर्ता के अनुकूल और स्वास्थ्य के लिए अनुकूल।
5. जहाँ तक संभव हो स्थानीय संसाधनों का उपयोग करे।

6. नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों उपयोग को बढ़ावा देना।
7. कम लागत और ऊर्जा कुशल।
8. मानवीय संपर्क और सहयोग को बढ़ाना।

प्रश्न 10. पेशे में वर्तमान प्रबंधन मॉडल की समीक्षा करें।

उत्तर—प्रकृति और पारम्परिक ज्ञान के प्रति मानव के अभिमानी रवैये ने हाल के दिनों में मानवता को बहुत नुकसान पहुँचाया है। यह उच्च समय है जब हम इन मान्यताओं की आलोचना कर उन्हें सही समझ के प्रकाश में सुधारते हैं वास्तव में, प्रकृति न केवल हमारा पोषक है, बल्कि सीखने का मैदान भी है। मनुष्य इस आत्मनिर्भर प्रकृति का अभिन्न अंग है और इसके साथ तालमेल बिठाने के लिए इसके कामकाज और प्रणालियों को समझना आवश्यक है। आखिरकार, यह प्रकृति के परिश्रमपूर्ण अध्ययन से ही पता चलता है कि विभिन्न प्रक्रियाओं को संचालित करने वाले सभी कानूनों और सिद्धान्तों को मानव द्वारा खोजा गया है। इसी तरह, प्रकृति की प्रणालियों और चक्रों को भी मानव निर्मित डिजाइनों में आवश्यक रूप से समझने और अनुकरण करने की आवश्यकता है। तभी, हम सही ढंग से कल्पना कर सकते हैं और जीवन जीने के समग्र तरीके को विकसित कर सकते हैं।

पारम्परिक प्रथाओं के लिए, यह सच है कि ज्ञान और कौशल में वृद्धि के साथ, और बदलती जरूरतों के साथ, प्रौद्योगिकियों और मानव उपयोग की प्रणालियों में सुधार करना आवश्यक है, हालांकि, यह करने के लिए कि उनकी आलोचनात्मक मूल्यांकन करना आवश्यक है। उन विशेषताओं की पहचान करना महत्वपूर्ण है जिन्होंने पारम्परिक प्रथाओं को लंबे समय तक मानवता की सेवा करने में सक्षम बनाया है। कई पारम्परिक प्रथाएँ पर्यावरण और लोगों के अनुकूल हैं और हमारी मान्यता और प्रतिधारण के बहुत अधिक योग्य हैं।

उदाहरण के लिए, हम इको-फ्रेंडली कृषि तकनीकों, वाटरशेड प्रबंधन, इको-रेस्टोरेशन, हर्बल फॉर्मूलेशन, संरक्षण तकनीकों और कारीगर प्रथाओं की पारम्परिक प्रथाओं से बहुत कुछ सीख सकते हैं। यह पीछे की ओर जाने के लिए राशि नहीं है, बल्कि हमें ज्ञान और अनुभव के विशाल भंडार से लाभ उठाने में सक्षम बनाता है ताकि हम सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सकें।

प्रश्न 11. वर्तमान परिदृश्य में पेशेवर नैतिकता में मुद्दों की गम्भीर रूप से जाँच करें। आज पेशे में किसी भी पाँच अनैतिक प्रथाओं को सूचीबद्ध करें और उन तरीकों पर अंकुश लगाने की कोशिश की जा रही है।

उत्तर—अनैतिक अभ्यास तेजी से बढ़ रहे हैं और उनका प्रभाव भी दूरगामी हो रहा है। विविध अभिव्यक्तियों में भ्रष्टाचार एक वायरस की तरह सभी व्यवसायों को पीड़ित कर रहा है। इसी प्रकार, अन्य अनैतिक प्रथाएँ भी नियन्त्रण से बाहर हो रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मानवी प्रवीणता को पेशे के नैतिक आचरण को विफल करने के लिए कानूनों को मोड़ने और सिस्टम को हटा देने के लिए नए और सूक्ष्म तरीके विकसित करने के लिए तेजी से दोहन किया जा रहा है। हम इन अनैतिक प्रथाओं की कुछ मुख्य श्रेणियों को निम्नानुसार सूचीबद्ध कर सकते हैं—

- कई रूपों में और विभिन्न स्तरों पर भ्रष्टाचार।
- कर चोरी, सार्वजनिक धन का दुरुपयोग।
- भ्रामक प्रचार, अनैतिक विज्ञापन और बिक्री को बढ़ावा देना।
- गलाकाट प्रतियोगिता।
- विभिन्न प्रविष्टियों के माध्यम से उपभोक्ताओं की कमजोरी को उजागर करना।
- मिलावट और फालतू उत्पादन।
- बड़े पैमाने पर जनता के स्वास्थ्य और सुरक्षा को खतरे में डालना।
- जमाखोरी और ओवर चार्जिंग आदि। सूची बहुत लंबी हो सकती है।

प्रश्न 12. यह बताएँ कि स्वतः की पहचान स्वतन्त्रता और स्वराज्य की ओर कैसे होती है।

उत्तर—जब हम अपने स्वत्व की खोज करते हैं और स्व-सत्यापन की प्रक्रिया में हैं और उसी के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं तो हम देख सकते हैं कि हमने अपने जीवन के विभिन्न स्तरों पर हमारे स्वत्व (हमारी प्राकृतिक स्वीकृति) की खोज कैसे की और हमारे बीच शुरू हुई क्रिया ने हमें हमारी पूर्व धारणाओं, हमारी दुविधाओं, अंतर्विरोधों और मजबूरियों से छुटकारा पाने में मदद की। हमारे स्वत्व का पता लगाने के बाद, हम तदनुसार रहते हैं और इस तरह से, हम स्वतन्त्र हो जाते हैं। जितना अधिक, हम इस स्व-संगठित स्थिति को प्राप्त करते हैं, हम दूसरों के साथ सद्भाव में रहने में सक्षम होते हैं और साथ ही हम इस स्थिति को प्राप्त करने में दूसरों की मदद करने में सक्षम होते हैं। इससे हमारी भागीदारी स्वराज में होती है। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। यह बिना किसी बाहरी बल के, अपने आप ही आगे बढ़ता है। यहाँ से हमें एक महत्वपूर्ण संदेश मिलता है कि समाज में व्यवस्था सुनिश्चित करने की दिशा में प्रयास संभव है और अपने आप में क्रम सुनिश्चित करने के द्वारा इसे निरन्तर किया जा सकता है। यह सही समझ का एक महत्वपूर्ण निहितार्थ है जब हम राष्ट्रों और दुनिया के लिए नीतियाँ बनाते हैं।